कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

सरसों की वैज्ञानिक खेती की तकनीक

देश में सरसों का रबी मौसम में तिलहनी फसल का प्रमुख स्थान है। दिल्ली देहात सरसों की खेती विभिन्न फसल चक्र के साथ की जाती है। सरसों की उत्पादकता को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं, जिन पर किसानों को बुवाई से पूर्व ध्यान देना आवश्यक है। जैसे

- विश्वसनीय संस्थानों से उन्नत किस्मों का चयन
- बीज एवं मृदा उपचार
- संतुलित उर्वरको का प्रयोग
- पादप रोगो, कीटो एवं खरपततवारों का प्रबंधन ठीक से समय पर करना आदि

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थान, कृषि विश्वविधालयों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रांे की निम्नलिखित उन्नत तकनिकीयो एवं सलाह को अपनाया जाये तो निश्चित रूप से सरसों की उत्पादकता के साथ साथ कम लागत में वैज्ञानिक खेती कर सकते है।

- **उन्नत किस्में का चयन:** कृषक सरसों की फसल के अधिकत्तम उत्पादन एवं तेल प्रतिशत वाली किस्मों का चयन कर सकते है। जैसे गिरिराज, आर.एच. 1424, आर.एच. 749, आर.एच. 725, पूसा सरसों-25, पूसा सरसों-26, पूसा सरसों 28, पूसा सरसों-30, पूसा सरसों-32, पूसा सरसों 33 आदि किस्मों का चयन कर सकते है।
- **खेत का चुनाव एवं तैयारी -** सरसों की फसल के लिए बलुई दोमट से दोमट मिट्टी वाली भूमि उपयुक्त रहती है। वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद खेत की एक-दो जुताई इस तरह से करें कि भूमि में नमी संरक्षण के साथ-साथ खरपतवार न जमने पायें एवं बुवाई से पहले खेत को दो बार जुताई करके तैयार करें।
- **बुवाई का समय एवं विधि -** सिंचित क्षेत्रों में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा होता है। असिंचित क्षेत्रों में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय सितम्बर का द्वितीय पखवाडा होता है। (विलम्ब से बुवाई करने पर माहू एवं अन्य कीटो एवं बीमारियों की प्रकोप के संभावना रहती है।)
- **पोषक तत्व प्रबंधन -** उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। सिचित क्षेत्रो मे नत्रजन 80 किग्रा., फास्फोरस 50-60 किग्रा. एवं पोटाश 30-40 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है । फास्फोरस का प्रयोग **सिंगल सुपर फास्फेट** के रूप में अधिक लाभदायक होता है। क्योंकि इससे सल्फर की उपलब्धता भी हो जाती है। यदि सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग न किया जाये तो **सल्फर की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए 25-30 किग्रा प्रति हेक्टर की दर से सल्फर का प्रयोग बुवाई** के समय करना चाहिए।

  यदि डी.ए.पी. का प्रयोग किया जाता है तो इसके साथ बुवाई से पूर्व 300 किग्रा0 जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना फसल के लिए लाभदायक होता है तथा अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 60 कुन्तल प्रति हे. की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई के बाद टापड्रेसिंग से रूप में डाली जानी चाहिए।
- **बीज एवं मृदा उपचार**
  - बीज को **जैव फफूदीनाशी ट्राईकोडर्मा विरिडी (5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज)** अथवा **कार्बेन्डाजिम (2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज)** से उपचारित करके बुवाई करें।
  - भूमि उपचार एवं रोगो से बचाव के लिए फसल की बुवाई से पहले **जैव फफूदीनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी (5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर) को 400 किलोग्राम गोबर** की खाद में मिलाकर बुवाई से पूर्व जुताई के समय खेत में डालें।
- **बीज की उपलब्धता -** कृषक नजदीक कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विश्वविधालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों एवं राज्य सरकार के कृषि विभाग से उपरोक्त प्रजातियों के बीज खरीद सकते है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक सह-अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली